साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

इस कधर

मुकेश चंद नेगी

तुम इस कधर
न मुस्कराओ
कहीं तुम्हारी हंसी
पलट न जाये

जिंदगानी बहती
नदी की रुकावट
बन जाये

हिम्मत कीजिए
इस कधर कि
कोई तुम्हारे नजर
को रोक न ले

हर मोड़ हंसी
होंठों पे रहे
नामो निसांन
रह जाए

रुकावट किसी के
आगे झूके
जीवन का सफर
चलता रहे ।।